होली मिलन समारोह 2019

दिनांक 31 मार्च 2019 को 'अखिल भारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा ' का वार्षिक समारोह एवं होली मिलन कार्यक्रम।

हर वर्ष की भाँति यह कार्यक्रम 'राय उमानाथ वली प्रेक्षाग्रह' क़ैसरबाग, लखनऊ में सम्पन्न हुआ।

सायं 04:45 से ही सदस्यों और अथितियों का सपरिवार आगमन प्रारम्भ हो गया। प्रेक्षाग्रह के द्वार पर ही श्री कृपा शंकर दीक्षित और उनके पुत्रों ने सुरभित चन्दन और रोली के टीके से लोगों का स्वागत किया। पूरा प्रेक्षागृह सदस्यों से खचाखच भरा था। विशेष आगंतुकों में इस वर्ष के मुख्य अतिथि डा सूर्य प्रसाद दीक्षित लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं डीन , सभा के अध्यक्ष न्याय मूर्ति श्री डी के त्रिवेदी , डा एस एन शुक्ला आई ए एस , श्री महेश द्विवेदी पूर्व डीजी पुलिस उत्तर प्रदेश , श्री दिवाकर त्रिपाठी आई ए एस , तथा रायबरेली , उन्नाव, सीतापुर से कई सदस्य इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 05:30 बजे परस्पर होली मिलन के उपरांत ठीक 6 बजे डा डी एस शुक्ला ने मंच से सभी आगंतुकों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि व सभा अध्यक्ष के साथ सभा के वरिष्ठ कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ।

मुख्य अतिथि के परिचय के बाद नन्हें पार्थ ने मुख्य अतिथि को विमोचन हेतु "कान्यकुब्ज वाणी' का आद्ययतन अंक प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि ने स्कूल आने जाने की सुविधा के लिए सात छात्राओं साइकिल, तीन छात्राओं के पूरे वर्ष भर की स्टेशनरी, व लगभन 35 छात्राओं को रु॰ एक हज़ार से तीन हज़ार का नगद पारितोषिक प्रदान किया।

इस वर्ष ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र, व प्रसिद्ध साहित्यकार डा अमिता दुबे को 'कान्यकुब्ज-रत्न' अलंकरण से अलंकृत किया गया। 'भवं भवानी सहीतं नमामि' वाक्य को ध्यान रखते हुए इस बार ब्रिगेडियर साहब और डा अमिता दुबे के जीवन साथियों को भी साथ ही सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम बोझिल न हो अतः छात्राओं प्रोत्साहन समारोह व विशिष्ट सदस्यों के अलंकरण के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम भी चलते रहे।

मुक्ता द्विवेदी ने वीर रस की कविता सुना कर स्मरण कराया कि होली रंग और शृंगार पर्व के अलावा पंजाब में शौर्य दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। कथ्थक नृत्य कि विख्यात कलाकार सुमति मिश्रा ने श्री राम को अर्चना में एक स्तुति-नृत्य प्रस्तुत किया जिसे दर्शकों ने बहुत ही सराहा।

सुमति का स्तुति नृत्य इतना प्रभावशाली था कि डा डी एस शुक्ला ने सुमति को आगामी वर्ष के कार्यक्रम में 'शिव-तांडव' नृत्य प्रस्तुत करने का अनुरोध किया , जिसे सुमति ने सहर्ष स्वीकार कर लिया।

महेश द्विवेदी जी ने हमेशा की भाँति अपनी रचनाओं से श्रोताओं को गुदगुदाया और आसन्न चुनाव पर भी कुछ हंसिकाएं प्रस्तुत कीं। रोली और ललिता ने श्रीमती नीरज शुक्ला, डाक्टर अनामिका शुक्ला, रीता बाजपेयी, ऋतु त्रिवेदी, एवं दीपाली शुक्ला के अपने ननद भाभियों के गैंग सहित सुमधुर 'होली गीत' प्रस्तुत किया।

विशेष- खैराबाद सीतापुर के हमारे बहुत सक्रिय सदस्य हैं। श्री मिश्र ने अध्यक्ष जी व पूरी सभा से दीपावली उपरांत एक मिलन समारोह खैराबाद में करने का प्रस्ताव देकर सभी सदस्यों को आने का निमंत्रण दिया। अध्यक्ष जी ने डा डी एस शुक्ला को इस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने का दायित्व सौंपा।

इसके अलावा श्री रामजी मिश्रा ने होली मिलन में आए सभी सदस्यों इत्र से सुवासित एक-एक रुमाल भेंट किया। हम आशा करते हैं कि रुमाल और उसकी सुरभि सदस्यों को अगले होली मिलन तक प्रफुल्ल रखेगी।

कार्यक्रम के मंच संचालक डा शुक्ला ने सभा में उपस्थित न्यायपालिका, प्रशासन और पुलिस के सभी पूर्व अधिकारियों के सम्मुख बड़े ही सनसनीखेज तरीके से एक आरोपित को पेश किया। इस व्यक्ति पर दसियों बार जन समूह के बीच से स्त्री अपहरण का आरोप था। इसके बावजूद इस व्यक्ति को सज़ा मिलना तो दूर अभी तक कोई एफ आई आर भी दर्ज़ नहीं हुई।

आरोपित विष्णु त्रिपाठी ने हर हर महादेव के गंभीर उदघोष के साथ अपना पक्ष रखा। उन्होंने इतिहास का हवाला देते हुए कहा कि हजारों वर्ष पहले सीता हरण के अपराध में रावण को मारा था। रावण की नाभि में अमृत कुंड होने के कारण वह मर कर भी अमर रहा। आज भी सामज में एक नहीं सैकड़ों रावण छुपे हैं। यह जब तब स्त्रियाँ पर आक्रमण भी करते रहते हैं। विष्णु त्रिपाठी ने बताया कि वह ऐसे रावणों के प्रति जनता को आगाह करने के लिए वह , हर दशहरे में रावण की भूमिका निभाते और और सीता हरण का स्वांग रचते हैं। यही उनका अपराध है।

वह चौक की राम लीला में हर वर्ष रावण की भूमिका को इतनी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि तत्कालीन राज्यपाल श्री विष्णुकांत शास्त्री जी ने उन्हें लंकेश की पदवी से अलंकृत किया था। तबसे वह क्षेत्र में लंकेश के नाम से जाने जाते हैं।

सभागार ने उन्हें निर्दोष मानते हुए हर्ष-तालियों के साथ उनके व्यक्तव का स्वागत किया।

सम्मानित अतिथियों का परिचय

कान्यकुब्ज रत्न ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्रा:

बेहटा कलां , जिला रायबरेली में जन्मे ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्र ने वर्ष १९७४ में लखनऊ विश्वविद्यालय से M Sc करके भारतीय सेना में तकनीकी अफसर के रूप में कमीशन प्राप्त किया. वर्ष १९८४-८६ में उन्हें IIT खड़गपुर से M Tech भी कर लिया. सेवा के दौरान उन्हें पंजाब , जम्मू काशमीर, राजस्थान और उत्तर पूर्व में सीमा पर तैनात रहने के बाद लगभग ७ वर्षों तक सेना मुख्यालय में कार्य किया। इन्दौर के निकट स्थित महू छावनी (जहाँ भीम राव जी आंबेडकर का जन्म हुआ) में दूरसंचार अभियान्त्रिकी सैन्य महाविद्यालय में इंसट्रक्टर व सेना एलेक्ट्रोमैगनेटिक्स केन्द्र के कमाण्डर के पदों पर भी कार्य किया. Institute for Defence Studies and Analyses (IDSA) दिल्ली में लगभग २ वर्षों तक Research Fellow की हैसियत से भी कार्य कर 36 वर्ष की सेवा पूर्ण करने के उपरान्त लखनऊ में स्थाई रूप से रह कर भी अपने पैतृक गांव में सामाजिक कार्यों में लग गये।

उनके पिताश्री, स्व पं राजेन्द्र कुमार मिश्र, जो मानभाई के उपनाम से अधिक प्रसिद्ध थे, रायबरेली के प्रमुख वकील, साहित्यकार एवं जुझारू राजनेता थे। मेरी रायबरेली जिला अस्पताल की पोस्टिंग के दौरान मुझे उनका अनन्य स्नेह प्राप्त था। वर्ष 2010 में जब मैंने उन्हें कान्यकुब्ज वाणी की एक प्रति समर्पित की तो वह बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने शीतांशु जी से इस पत्रिका में निरंतर सहयोग का वचन भी ले लिए था। हर्ष का विषय है की शीतान्शु जी तब से हमारे आभा मण्डल के सदस्य हैं और तब से ही एक निश्चित धनराशि प्रति वर्ष वाणी के माध्यम से छात्राओं को प्रोत्साहन राशि प्रदान कर रहे हैं।

श्रीमती रश्मि मिश्रा (ब्रिगेडियर शीतांशु मिश्रा की पत्नी) - श्रीमती मिश्रा साहित्य में परास्नातक हैं और एक सफल गृहणी का दायित्व निर्वहन कर रहीं हैं। रश्मि जी मलीहाबाद कि रहने वाली हैं जिसकी वजह से हमलोगों को आम कि फसल में सुस्वादु आम खाने को मिलते रहते हैं।

कान्यकुब्ज रत्न अमिता दुबे

डा अमिता दुबे की जन्म और कर्मभूमि लखनऊ ही है। लखनऊ विश्वविद्यालय से इन्होंने हिन्दी और अर्थशास्त्र में एम ए करने के उपरांत हिन्दी में ही पी एच डी की उपाधि ग्रहण की। इसके अलावा इन्होंने एल एल बी कर संप्रति यह हिन्दी संस्थान लखनऊ में वरिष्ठ संपादक का दायित्व निभा रहीं हैं। डा अमिता दुबे एक सफल संपादक , साहित्यकार, कुशल नेत्री के अलावा एक सहृदय माँ और समर्पित ग्रहणी भी हैं। सम्पादन के अलावा यह एक स्थापित साहित्यकार भी हैं। समालोचना , उपन्यास, कहानी, कविता, और समीक्षा आदि जितनी भी साहित्यिक विधायाएँ हैं उनमे इनका पूर्ण अधिकार है। इन विषयों में अपनी प्रकाशित पुस्तकों की रजत जयंती मना चुकी हैं। बारहों मास इनका साहित्य के विभिन्न आयामों पर कम से कम दो अथवा तीन कृतियों का सर्जन चलता रहता

है। मात्र 15 वर्ष के साहित्य सर्जन में इन्हें 'राष्ट्र-धर्म गौरव सम्मान ', मुक्तिबोध सम्मान , नीरज सम्मान के अलावा 50 से भी अधिक सम्मानों से सम्मानित हो चुकी हैं। लेखन के समय अमिता जी इतनी फोकस्ड रहती हैं कि इनके प्रकाशक को प्रूफ रीडिंग कराने की आवश्यकता नहीं पड़ती , क्योंकि मूल हस्तलिखित पाण्डुलिपि में कोई स्पेलिंग एरर अथवा काट-पीट नहीं होती।

अमिता जी की एक विशेषता से मैं विषेशरूप से प्रभावित हूँ , वह है हमेशा प्रसन्न रहने का भाव। घर , कार्यालय, जन संपर्क और सृजन में इतना व्यस्त रहने के बाद भी- इनके चेहरे पर सदैव मुस्कान ही रहती है , जो कि ओढ़ी हुई नहीं है। यह संभवतः इनकी आंतरिक प्रसन्नता का द्योतक है जो अम्लान मन में दायित्वों का पूर्णता से निर्वहन व सृजन के आनंद से ही संभव है। मैं अमिता जी का स्वागत करता हूँ।

आलोक दुबे (अमिता जी के पति)-श्री आलोक दुबे जी इनके जीवन साथी हैं और वह हमारे मेडिकल विभाग में कार्य करते हैं। आलोक जी भी रचनाधर्मी हैं और 'मकडजाल' नाम से इनका एक कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुका है।